2025
संशोधित
संस्करण

द लेक्सिकन

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि

सिविल सेवा परीक्षा के सामान्य अध्ययन प्रश्न–पत्र IV के
पाठ्यक्रम व बदलती प्रवृत्ति के अनुरूप

2019 से टॉपर्स द्वारा पठित व अनुमोदित
विगत वर्षों में 90 प्रतिशत से अधिक प्रश्न इस पुस्तक से पूछे गए

- UPSC व राज्य लोक सेवा आयोगों की मुख्य परीक्षाओं में नीतिशास्त्र के बदलते रुझानों के अनुरूप नीतिशास्त्रीय अवधारणाओं का सरल एवं सुगम प्रस्तुतीकरण
- वास्तविक जीवन-स्थितियों में नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों के व्यावहारिक अनुप्रयोगों के साथ अवधारणाओं की प्रभावी प्रस्तुति, व्यापक संशोधन व अद्यतन दृष्टिकोण के साथ
- जटिल सामाजिक-प्रशासनिक मुद्दों के विश्लेषण के लिये सुसंगठित रूपरेखा के साथ नवीन समकालीन सामाजिक समस्याएं और नैतिक मुद्दे

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण 2025

द लेक्सिकन

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि

❑ अवधारणा ❑ सिद्धांत ❑ केस स्टडी ❑ मुद्दे ❑ शब्दावलियां

संघ एवं राज्य सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-IV के संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

निःशुल्क प्राप्त करें

सिविल सर्विसेज़ क्रॉनिकल मासिक पत्रिका का 1 वर्ष का ऑनलाइन सब्सक्रिप्शन

चरण 1: QR कोड स्कैन करें

चरण 2: नीचे दिये गए कूपन को स्क्रैच करें

चरण 3: इस कोड को निर्दिष्ट स्थान पर प्रविष्ट करें और वार्षिक सदस्यता का लाभ उठाएं

संपादकः एन. एन. ओझा

(सिविल सेवा परीक्षाओं के मार्गदर्शन में 35 वर्षों का अनुभव)

लेखन एवं प्रस्तुतिः क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE

Nurturing Talent Since 1990

संवाद

"द लेक्सिकन: नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि" पुस्तक का यह सातवां संशोधित संस्करण सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, विशेष रूप से सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-IV की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों के लिये एक सुव्यवस्थित एवं सारगर्भित संकलन है, जो इस प्रश्न-पत्र के अनुरूप नैतिक अवधारणाओं की स्पष्टता, मूल्यपरक सोच और विश्लेषणात्मक क्षमता विकसित करने में सहायक होगा। यूपीएससी पाठ्यक्रम की गतिशील प्रकृति और इसके बदलते स्वरूप को ध्यान में रखते हुए, इस संस्करण को व्यापक रूप से अद्यतन किया गया है, ताकि नैतिक अवधारणाओं और केस स्टडीज़ को एक समग्र, सुव्यवस्थित और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया जा सके।

विगत कुछ वर्षों में "लेक्सिकन" पुस्तक यूपीएससी की सिविल सेवा परीक्षा की नवीनतम मांगों को संबोधित करने के लिये उत्तरोत्तर खुद को ढाल रही है। इस संस्करण में परिष्कृत विषय-वस्तु, अद्यतन उदाहरण तथा समकालीन नैतिक मुद्दों पर गहन विमर्श को समाहित करते हुए इस परिशोधन यात्रा को जारी रखा गया है।

इस संस्करण में पाठ्य प्रस्तुति को बेहतर बनाने और नैतिक अवधारणाओं को और अधिक सरल व सहज बनाने के लिये महत्वपूर्ण सुधार किये गए हैं। बेहतर समझ के लिये प्रारंभिक अध्यायों को व्यवस्थित तरीके से पुन: संशोधित किया गया है, ताकि आप अवधारणाओं को अधिक प्रभावी तरीके से समझ सकें और उन्हें आसानी से याद रख सकें। परीक्षा की लगातार बढ़ती जटिलताओं को पहचानते हुए यह संस्करण केस स्टडी हल करने के लिये आवश्यक मनोवृत्ति पर भी गहराई से प्रकाश डालता है। इसके अतिरिक्त, नैतिक मुद्दों से संबंधित अध्याय में त्वरित न्याय/बुलडोजर जस्टिस, चुनावों में फ्रीबीज़ का प्रचलन, आपदा प्रबंधन/राष्ट्रीय संकट, पेपर लीक एवं कदाचार तथा अंतरराष्ट्रीय प्रवासन जैसे कुछ अति महत्वपूर्ण समसामयिक और जटिल सामाजिक-प्रशासनिक मुद्दों को भी शामिल किया गया है। नवीनतम संस्करण में उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की राज्य सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-IV के विगत 3 वर्षों के प्रश्नों को भी ध्यान में रखा गया है तथा आवश्यकतानुरूप इसे परिवर्धित किया गया है।

सामान्य अध्ययन के प्रश्न-पत्र-IV को समझने के लिये केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह नैतिक सिद्धांतों को और अधिक गहराई से समझने और उन्हें वास्तविक जीवन स्थितियों में प्रभावी रूप से लागू करने की अपेक्षा करता है। इस अपेक्षा को पूर्ण करने हेतु क्रॉनिकल संपादकीय टीम द्वारा अपने समृद्ध अनुभवों और विशेषज्ञता को शामिल करते हुए, आरंभ से ही इस पुस्तक को संशोधित और पुनर्संकल्पित किया गया है। वर्षों के शोध के माध्यम से प्राप्त मूल्यवान अंतर्दृष्टि द्वारा वर्तमान संस्करण को छात्रों के लिये एक व्यापक और समग्र समाधान के रूप में परिवर्तित किया गया है। यह संस्करण सुनिश्चित करता है कि छात्र न केवल प्रमुख नैतिक अवधारणाओं को समझें, बल्कि शासन में नैतिक दुविधाओं को सुलझाने के लिये आवश्यक समीक्षात्मक विचार कौशल भी विकसित करें।

हमें आशा है कि "द लेक्सिकन: नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि" पुस्तक आपके लिये एक अपरिहार्य संसाधन सिद्ध होगी तथा आपको एक नैतिक, सक्षम और समर्पित सिविल सेवक बनने की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करेगी।

पुस्तक में सुधार और संशोधन के संबंध में आप अपने सुझाव editor@chronicleindia.in पर भेज सकते हैं।

भविष्य के लिए शुभकामनाएं...

- एन.एन. ओझा (संपादक)

इस पुस्तक को कैसे पढ़ें?

द लेक्सिकन: नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि पुस्तक नीतिशास्त्र एवं संबंधित अवधारणाओं के सभी आयामों को शामिल करने वाला एक सार-संग्रह है। इसे विशेष रूप से सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-IV के पाठ्यक्रम तथा अन्य अवधारणाओं को संबोधित करते हुए संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा तथा अन्य राज्य सिविल सेवा परीक्षाओं के दृष्टिकोण से तैयार किया गया है।

यह पुस्तक नीतिशास्त्र की मूलभूत अवधारणाओं के साथ-साथ वास्तविक जीवन स्थितियों में इसके अनुप्रयोग की समझ को बढ़ाने में मददगार होगी। इस पुस्तक के अध्ययन में निम्नलिखित दृष्टिकोण का पालन किया जा सकता है-

चरण 1: प्रमुख शब्दावलियों की समझ: नीतिशास्त्र के संबंध में प्रारंभिक स्पष्टता विकसित करने तथा इस पुस्तक की ज्ञान-मीमांसा से परिचित होने के लिए, सर्वप्रथम आपको इसके आरंभ में दिये गए "पाठ्यक्रम" और "पाठ्यक्रम में प्रयुक्त शब्दों के अभिप्राय" का अध्ययन करना चाहिए। पाठ्यक्रम की समझ आपको इस प्रश्न-पत्र की मांग एवं दायरे से परिचित कराएगी तथा "पाठ्यक्रम में प्रयुक्त शब्दों के अभिप्राय" का अध्ययन आपको इसकी स्पष्ट समझ विकसित करने में सहायक होगा।

चरण 2: मूलभूत अवधारणाओं का विश्लेषण और वास्तविक जीवन में उनके अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रण: पाठ्यक्रम से परिचित होने के बाद, आपसे यह अपेक्षा की जाती है कि आप इस पुस्तक का 'प्रथम बार अध्ययन' (First Reading) करें। प्रथम बार अध्ययन के दौरान पाठक को बुनियादी अवधारणाओं और वास्तविक जीवन परिवेश में उनके अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यह विषय छात्रों से बुनियादी समझ की मांग करता है; इसलिए संबंधित अवधारणाओं एवं विषयों के बीच अंतर करने का प्रयास करें। विषयों से अधिक परिचित होने तथा गहरी अवधारणात्मक समझ एवं स्पष्टता प्राप्त करने के लिए, इस पुस्तक को दोबारा पढ़ने की आवश्यकता होगी। अध्ययन के दौरान पाठक को नीतिशास्त्र से जुड़ी अवधारणाओं को आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए तथा पाठ्यक्रम में दिये गए 'प्रमुख शब्दों' (Keywords) को कंठस्थ कर लेना चाहिए, इससे उन्हें विषय के साथ अधिक सहज होने में मदद मिलेगी।

चरण 3: केस स्टडी पढ़ते समय वास्तविक जीवन स्थितियों को चित्रित करना: तीसरे चरण में विशेष रूप से 'व्यावहारिक पहलुओं' पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हुए इस प्रश्न-पत्र का एक व्यापक और विश्लेषणात्मक ढांचा विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। आप इस पुस्तक में दी गई केस स्टडी को पढ़कर और विभिन्न अवधारणाओं के अंतर्संबंधों को समझकर इस संदर्भ में अधिकतम प्रभावोत्पादकता विकसित कर सकते हैं। केस स्टडी को हल करने के लिये आयामों की विविधता और सिद्धांतों के अनुप्रयोग की समझ जरूरी है। ऐसे में इस पुस्तक का "केस स्टडी" नामक खंड आवश्यक अभिवृत्ति और अभिरुचि या अभिक्षमता विकसित करने, विषयों की व्यापक समझ बनाने में मददगार हो सकता है।

चरण 4: अवधारणाओं/केस स्टडीज़ का विगत वर्ष के प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में अवलोकन: एक बार जब आप ये सभी चरण पूरा कर लें, तो विगत वर्षों के प्रश्नों को पढ़ते समय अपनी समझ का विश्लेषण करने का प्रयास करें। यह आपको इस विषय के संबंध में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा और इस पुस्तक के द्वारा आपकी अर्जित अभिक्षमता को प्रतिबिंबित करेगा। बाद में इस पुस्तक की बार-बार और आवधिक पुनरावृत्ति के माध्यम से आप इसे और बढ़ा सकते हैं।

अनुक्रमणिका

1. नीतिशास्त्र, मूल्य एवं नैतिकता 01–40

➢ **नीतिशास्त्र की अवधारणा** **2**
- नीतिशास्त्र का विकास 3
- नीतिशास्त्र का क्षेत्र 6
- नीतिशास्त्र और अन्य विज्ञान 6
- नीतिशास्त्र की अन्य अवधारणाओं से भिन्नता 7
- नीतिशास्त्रीय मानक 8
- शासन में नीतिशास्त्र के निर्धारक 10
- नीतिशास्त्र में मानवकर्म 11
- नीतिशास्त्र की शाखाएं अथवा आयाम 11

➢ **व्यावहारिक नीतिशास्त्र के विभिन्न क्षेत्र** **14**
- राजनीतिक नीतिशास्त्र 14
- सैन्य नीतिशास्त्र 14
- युद्ध नीतिशास्त्र 15
- पर्यावरणीय नीतिशास्त्र 16
- परिस्थितिजन्य नीतिशास्त्र 19
- सामाजिक नीतिशास्त्र 19

➢ **नैतिकता (Morality)** **20**
- नैतिकता बनाम नीतिशास्त्र 21
- नैतिकता, नैतिक मूल्य और नीतिशास्त्र 22
- नैतिक निर्णय 25
- नैतिक चरित्र या आचरण 26
- नैतिक जिम्मेदारी 27
- नैतिक विवेक 27
- नैतिक अंतर्ज्ञान 28
- नैतिक अंतर्दृष्टि 28
- नैतिक तर्कशक्ति 29
- नैतिक व्यवहार 30
- नैतिकता-विहीन, अनैतिक और अनभिप्रेत-अनैतिक कार्य के बीच अंतर 31

➢ **मूल्य (Values)** **32**
- मानवीय मूल्य 32
- मूल्यों का वर्गीकरण 34
- सामाजिक मूल्य 35
- नैतिक मूल्य अथवा मान्यताएं 36
- आधारभूत मानवीय मूल्य 38
- मूल्यों का समाजशास्त्रीय महत्व 40

2. नीतिशास्त्र और मानवीय सह–संबंध 41–64

➢ **मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्व, इसके निर्धारक और परिणाम** **42**
- मानवीय क्रियाएं 42
- मानव क्रियाकलाप में नीतिशास्त्र 43
- मानवीय क्रियाकलाप में बाधाएं 44
- मानवीय क्रियाओं में नैतिकता का महत्व 45
- दोहरे प्रभाव का सिद्धांत 47
- मानवीय क्रियाकलापों के नैतिकता का निर्धारक 47

➢ **निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र** **49**
- निजी संबंधों में नीतिशास्त्र 50

- सार्वजनिक जीवन में नैतिकता....52

➢ **मानवीय मूल्य-महान नेताओं, सुधारकों व प्रशासकों के जीवन तथा उनके उपदेशों से शिक्षा....53**
- महान नेताओं के जीवन से शिक्षा....54
- महान प्रशासकों के जीवन से शिक्षा....54
- महान सुधारकों के जीवन से शिक्षा....54

➢ **मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका....55**
- परिवार व मूल्य विकास....56
- समाजीकरण और मूल्य संरचना....60
- मूल्य निर्माण में संस्कृति की भूमिका....62
- मूल्यों के आत्मसातीकरण में शिक्षण संस्थानों की भूमिका....63

3. अभिवृत्ति 65–108

➢ **अभिवृत्ति: सारांश, विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध....66**
- अभिवृत्ति के घटक....68
- अभिवृत्ति में परिवर्तन....77
- वास्तविक बनाम अभिव्यक्त अभिवृत्ति....83

➢ **नैतिक एवं राजनैतिक अभिवृत्ति....86**
- प्रमुख नैतिक अभिवृत्तियां....86
- पूर्वाग्रह एवं भेदभाव....88
- राजनीतिक अभिवृत्ति....90

➢ **सामाजिक प्रभाव और धारणा....93**
- सामाजिक प्रभाव....93
- प्रत्यायन या धारणा....99

➢ **लोक एवं प्रशासनिक अभिवृत्ति व भारत में अभिशासन....104**
- **लोक सेवक के लिए उपयुक्त अभिवृत्ति....106**

4. सिविल सेवा अभिरुचि और बुनियादी मूल्य 109–138

➢ **सत्यनिष्ठा, भेदभाव रहित तथा गैर-तरफदारी....110**
- सिविल सेवा संहिता....110

➢ **भारत में सिविल सेवा मूल्य....111**
- भारत में सिविल सेवकों की नैतिक संहिता....111
- सिविल सेवा में मूल्यों का महत्व....114
- सिविल सेवा मूल्य व नैतिकता....115
- मूल्य और सार्वजनिक मूल्य....115
- सार्वजनिक मूल्य की बहुलता....116

➢ **अभिरुचि (Aptitude) ---- 117**
- अभिवृत्ति और अभिरुचि....118
- सत्यनिष्ठा....119
- सिविल सेवकों में शुचिता....121
- कार्यनिर्वाह-क्षमता....123

➢ **निष्पक्षता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव....124**

➢ **कमजोर वर्गों के प्रति समानुभूति, सहिष्णुता व संवेदना....127**

5. भावनात्मक समझ 139–172

- भावनात्मक समझ या बुद्धिमत्ता का विकास....141
- भावनात्मक समझ के अवयव....142
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापन....143

➢ **भावनात्मक गुणक (EQ): भावनात्मक समझ (EI) की मात्रा का प्रारूप....146**

- EI, IQ में अंतर.....148
- भावनात्मक समझ और कार्य अभिवृत्ति (मनोवृत्ति).....150
- कुशाग्र भावना.....152
- भावनात्मक समझ एवं लैंगिक भेद.....153
- भावनात्मक बुद्धि व समझ रखने वाले प्रशासक के गुण ---------- 154

➢ **सिविल सेवा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उपयोग.....156**

➢ **नेतृत्वकर्ता में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की समझ.....158**

➢ **नेता, प्रशासक एवं सुधारक.....164**

- प्रबंधक बनाम नेतृत्वकर्ता : व्यक्तित्व की विशेषता.....166
- नेतृत्वकर्ता वाले गुणों का विकास.....168
- व्यक्तिगत नैतिक नीति.....171

6. भारत तथा विश्व के नैतिक विचारकों तथा दार्शनिकों के योगदान 173–220

➢ **दर्शन.....174**

➢ **आधुनिक नैतिक दर्शन.....174**

➢ **मानकीय नीतिशास्त्र के सिद्धांत.....176**

- सद्‌गुण का सिद्धांत.....176
- प्रयोजनवादी (उपयोगितावादी) सिद्धांत.....177
- जेरेमी बेंथम का परिमाणात्मक उपयोगितावाद.....179
- मिल का गुणात्मक उपयोगितावाद.....180
- कांट का नीतिशास्त्रीय सिद्धांत.....180
- भ्रष्टाचार और नीतिशास्त्रीय सिद्धांत.....181
- सद्‌गुण और उत्तम आचरण.....182
- प्लेटो का सद्‌गुण सिद्धांत.....182
- अरस्तू का सद्‌गुण सिद्धांत.....183
- सामाजिक अनुबंध का सिद्धांत.....184
- संवैधानिक नैतिकता का सिद्धांत.....185

➢ **नीतिशास्त्र के अन्य प्रमुख सिद्धांत.....187**

➢ **भारतीय दर्शन में नीतिशास्त्र.....191**

➢ **धर्म और नीतिशास्त्र.....194**

- प्रमुख धर्म एवं नीतिशास्त्र.....195
- बौद्ध नीतिशास्त्र.....200
- जैन नीतिशास्त्र.....203
- चार्वाक नीतिशास्त्र अथवा लोकायत.....204
- गांधीवादी नीतिशास्त्र.....205

➢ **स्वार्थमूलक नैतिकता.....210**

➢ **कानून, नियम और नीतिशास्त्र.....211**

➢ **दंड और इसका नैतिक औचित्य.....217**

7. लोक प्रशासन में लोक/सिविल सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्र 221–280

➢ **लोक सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्र: स्थिति तथा समस्याएं.....222**

- लोक जीवन के मुख्य सिद्धान्त.....223
- लोक सेवा के मूल्य.....225
- लोक सेवा आचार.....226
- लोक प्रशासन में नीतिशास्त्र 226
- लोक सेवकों में नीतिशास्त्र की स्थिति.....228

- लोक सेवकों में भ्रष्टाचार 230
- लोक प्रशासन में नीतिशास्त्र के निर्धारक 230
- लोक प्रशासन में नीतिशास्त्र की समस्याएं 231
- लोक सेवकों की नैतिक मार्गदर्शिका के रूप में भगवद्गीता 232
- भारतीय सिविल सेवा में नैतिकता से जुड़े मुद्दे 233
- नैतिक सक्षमता 234
- सिविल सेवकों में नैतिक व्यवहार का विकास 236
- शासन व्यवस्था में नीतिपरक तथा नैतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण 238

➢ **सरकारी तथा निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएं तथा दुविधाएं 242**
- दुविधा 245
- नैतिकतामुक्त वातावरण 251
- संगठनात्मक सत्यनिष्ठा 251
- नेतृत्व 253
- नैतिक पतन 255
- नैतिक मार्गदर्शन के स्रोतों के रूप में विधि, नियम, विनियमन तथा अंतरात्मा 258
- विधि का विभाजन 259
- अंतरात्मा 265

➢ **शासन व्यवस्था में नीतिपरक तथा नैतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण 270**
- नैतिक शासन 271
- नीतिशास्त्रीय संगठन की बाधाएं 272

8. अंतरराष्ट्रीय संबंध और नैतिकता 281–304

➢ **अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता 282**

➢ **सामाजिक पूंजी और अंतरराष्ट्रीय संबंध 290**

➢ **अंतरराष्ट्रीय मामलों के अंतर्गत नैतिक मुद्दे 292**
- अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेप 297
- युद्ध की नैतिकता के विरुद्ध तर्क 301

9. शासन व्यवस्था में ईमानदारी 305–378

➢ **लोक सेवा की अवधारणा 306**
- लोक सेवा के प्रकार्य 307
- लोक सेवा के प्रतिदर्श 309
- लोकहित के लिए लोक कर्त्तव्य 311
- सिविल सेवा 312
- विकासपरक प्रशासन के व्यवहारपरक पैमाने 314

➢ **शासन व्यवस्था और ईमानदारी का दार्शनिक आधार 317**

➢ **सरकार में सूचना का आदान-प्रदान, सूचना का अधिकार और पारदर्शिता 322**
- सूचना का लोकतांत्रीकरण 323
- पारदर्शिता 325

➢ **नीतिपरक आचार संहिता, आचरण संहिता 326**
- मंत्रियों के लिए आचार संहिता 326
- कानून-निर्माताओं के लिए नैतिकता 328
- लाभ के पद की अवधारणा एवं नैतिक संहिता 330
- आचरण संहिता 331

➢ **नागरिक घोषणा पत्र 334**
- नागरिक घोषणा पत्र का सिद्धांत 335

➢ **कार्य संस्कृति 338**
- कार्यपरक संस्कृति 339
- एक आदर्श कार्य संस्कृति में बाधाएं 340

- नौकरशाही का राजनीतिकरण 341
- राजनीति का नौकरशाहीकरण 342
- भारत में राजनीति का अपराधीकरण 343

➢ **नागरिकों को सेवा प्रदान करने की गुणवत्ता 344**

➢ **लोक निधि का उपयोग 350**

- सरकारी खाते 353
- निधि का उपयोग 354
- निधि का अंकेक्षण 357
- प्रशासन पर विधायी नियंत्रण 360
- लोक प्रशासन पर न्यायिक नियंत्रण 361
- सामाजिक लेखा परीक्षण 362

➢ **भ्रष्टाचार की चुनौतियां 363**

- राजनीतिक और प्रशासनिक भ्रष्टाचार की पहचान करने की रणनीति 366
- भ्रष्टाचार का समाधान 368
- भ्रष्टाचार रोकने हेतु कानूनी ढांचा 369
- व्हिसल ब्लोअर की सुरक्षा 371
- सरकारी कर्मचारियों की आचरण नियमावली 372
- भ्रष्टाचार को नियंत्रित करने के लिए सार्वजनिक संस्थानों में प्रणालीगत सुधार 372
- भ्रष्टाचार निवारण से संबंधित समिति एवं आयोग 373
- सत्यनिष्ठा समझौता 375
- नागरिक समाज 376
- ई-शासन 377

10. लेक्सिकन ऑफ केस स्टडी 379–392

➢ **केस स्टडी क्या है? 380**

➢ **केस स्टडी के प्रकार 380**

- व्याख्यात्मक केस स्टडी 381
- अन्वेषी केस स्टडी 382
- संचयी केस स्टडी 384
- गंभीर उदाहरण केस स्टडी 385

➢ **केस स्टडी प्रारूप पर संक्षिप्त विवरण 386**

- केस स्टडी का महत्व 386
- केस स्टडी की सीमाएं 387
- केस स्टडी को हल करने के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण 387

➢ **केस स्टडी में शामिल हितधारक 389**

- केस स्टडी की व्याख्या 391
- याद करने योग्य सिद्धांत 392

11. केस स्टडी: पूर्वावलोकन एवं संक्षिप्त विश्लेषण 393–414

➢ **विगत वर्ष के प्रश्न-पत्र का सामान्य अवलोकन 394**

- केस-स्टडी संबंधित प्रश्नों का अवलोकन 394

➢ **विगत वर्षों में पूछी गई केस स्टडी 394**

12. प्रशासन में हितों का संघर्ष/टकराव 415–440

- सरकार में हितों का टकराव 416
- प्रशासन में संघर्ष 429
- सेवा की भावना 432
- अतिव्यापी/परस्पर व्याप्त और अन्तरनुभागीय जिम्मेदारियों में हितों का संघर्ष/टकराव 434

13. व्यावसायिक नीतिशास्त्र 441–462

- व्यावसायिक शासन....443
- व्यवसायों के लिए नैतिक दुविधाएं....445
- व्यावसायिक आचार संहिता एवं नीतिशास्त्रीय संहिता....447

14. उद्धरण और कथन 463–476

- भारतीय....465
- पश्चिमी....470
- वैश्विक....473
- मूल्यों पर कथन....474
- नैतिकता पर कथन....474
- शक्ति पर दार्शनिक विचार....475
- भ्रष्टाचार पर कथन....475
- उद्धरण और लोकोक्तियां....475

15. नैतिक मुद्दे 477–560

- **सामाजिक लोकाचार, प्रशासनिक दुविधा एवं निर्णय निर्माण....478**
- **समकालीन सामाजिक समस्याएं एवं नैतिक मुद्दे....480**
  - जाति आधारित भेदभाव....480
  - त्वरित न्याय/बुलडोजर जस्टिस....481
  - चुनावी वादों में मुफ्त उपहार/रेवड़ी कल्चर....483
  - आपदा प्रबंधन/राष्ट्रीय संकट....485
  - प्रतियोगी परीक्षाओं में पेपर लीक एवं कदाचार....486
  - धर्मगुरुओं के अनुयायी वर्ग एवं अंध श्रद्धा....488
  - अंतरराष्ट्रीय प्रवासन....490
  - दयामृत्यु/इच्छामृत्यु....492
  - आत्महत्या....494
  - बेरोजगारी....496
  - श्रम से जुड़े नैतिक मुद्दे....497
  - भिक्षावृत्ति....498
  - वेश्यावृत्ति....499
  - अल्पसंख्यक....501
  - अवैध प्रवासी....502
  - लिंचिंग और असहिष्णु समाज....503
  - कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न....504
  - कमजोर और वंचित वर्ग....505
  - लैंगिक असमानता....507
  - एलजीबीटीक्यू से संबंधित नैतिक मुद्दे....509
  - अजन्मे बच्चे का अधिकार....509
  - स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य देखभाल संबंधी नैतिकता....510
  - इंटर-जेनरेशनल इक्विटी....511
  - डिजिटलीकरण तथा संस्कृति....512
  - शिक्षा और नैतिक मुद्दे....514
- **संवैधानिक एवं कानूनी मुद्दे....515**
  - समलैंगिक व्यक्तियों के विवाह का अधिकार....515
  - विलंबित न्याय....516
  - नि:शुल्क विधिक सहायता का अधिकार....518
- **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी....520**

- लिंग-निर्धारण 520
- सरोगेसी 521
- जेनोट्रांसप्लांटेशन : चिकित्सकीय व नैतिक निहितार्थ 522
- स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं का व्यावसायीकरण 524
- गर्भपात से संबंधित नैतिक मुद्दे 525
- चिकित्सा उद्योग के नीतिगत मुद्दे 526
- जीनोम एडिटिंग 527
- थ्री-पेरेंट बेबी 528
- मानव प्रतिरूपण और डिजाइनर शिशु 530
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संबंधित नैतिक मुद्दे 530
- डेटा गोपनीयता और संरक्षण 531

➢ **मीडिया 532**
- भारतीय मीडिया और पत्रकारिता : नैतिक मुद्दे 532
- डिजिटल मीडिया तथा इसकी चुनौतियां 533
- मजबूत शिकायत तंत्र का अभाव 534

➢ **लोक प्रशासन एवं शासन 536**
- प्रशासनिक विवेकाधिकार 536
- प्रशासन में भ्रष्टाचार 537
- भ्रष्टाचार उजागर करना 538
- भाई-भतीजावाद 539

➢ **मानव संसाधन 540**
- मूनलाइटिंग 540
- मानव संसाधन से संबंधित नैतिक मुद्दे 541

➢ **आर्थिक मुद्दे 542**
- कॉर्पोरेट शासन से संबंधित नैतिक मुद्दे 542
- नीतिशास्त्र एवं कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी 543
- अभियांत्रिकी व्यवसाय/उद्यम में शामिल नैतिक मुद्दे 545
- पूंजी अधिकतमीकरण तथा पूंजी का समान वितरण 546
- कृषक संकट संबंधी नैतिक मुद्दे 547

➢ **पर्यावरण 548**
- जलवायु शरणार्थी 548
- मानव-पशु संघर्ष और नाशक प्रजातियों को मारने से संबंधित मुद्दे 549
- पर्यावरण बनाम विकास बहस 551

➢ **अंतरराष्ट्रीय नैतिकता संबंधी मुद्दे 552**
- विकासात्मक सहायता और सशर्तता संबंधी नैतिकता 552
- मानवीय हस्तक्षेप 553
- अंतरराष्ट्रीय व्यापार संबंधी WTO के मानदंड एवं अत्यल्प विकसित देशों के हित 553
- मुद्रा का हेरफेर 554

➢ **सुरक्षा संबंधी मुद्दे 555**
- आतंकवाद और सामाजिक नीतिशास्त्र 555
- सरकार द्वारा नागरिकों के विरुद्ध अविवेकपूर्ण रूप से बल का प्रयोग 556
- विदेशी जल-सीमा में मछुआरों का भटकाव एवं उनकी गिरफ्तारी 556
- परमाणु हथियार और निरस्त्रीकरण 557

➢ **आपदा-प्रबंधन 558**
- आपदा-प्रबंधन नीतिशास्त्र 558

16. नीतिशास्त्र संबंधित शब्दावली **561–578**

पाठ्यक्रम

सामान्य अध्ययन-IV : नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि

इस प्रश्न-पत्र में ऐसे प्रश्न शामिल होंगे जो सार्वजनिक जीवन में उम्मीदवारों की सत्यनिष्ठा, ईमानदारी से संबंधित विषयों के प्रति उनकी अभिवृत्ति तथा उनके दृष्टिकोण तथा समाज से आचार-व्यवहार में विभिन्न मुद्दों तथा सामने आने वाली समस्याओं के समाधान को लेकर उनकी मनोवृत्ति का परीक्षण करेंगे। इन आयामों का निर्धारण करने के लिए प्रश्न-पत्रों में किसी मामले के अध्ययन (केस स्टडी) का माध्यम भी चुना जा सकता है। मुख्य रूप से निम्नलिखित क्षेत्रों को कवर किया जाएगा:

- नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध: मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्व, इसके निर्धारक और परिणाम; नीतिशास्त्र के आयाम; निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र; मानवीय मूल्य-महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन तथा उनके उपदेशों से शिक्षा; मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका।
- अभिवृत्ति: सारांश (कंटेन्ट), संरचना, वृत्ति: विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध; नैतिक और राजनीतिक अभिरुचि; सामाजिक प्रभाव और धारणा।
- सिविल सेवा के लिए अभिरुचि तथा बुनियादी मूल्य, सत्यनिष्ठा, भेदभाव रहित तथा गैर-तरफदारी, निष्पक्षता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव, कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति, सहिष्णुता तथा संवेदना।
- भावनात्मक समझ: अवधारणाएं तथा प्रशासन और शासन व्यवस्था में उनके उपयोग और प्रयोग।
- भारत तथा विश्व के नैतिक विचारकों तथा दार्शनिकों के योगदान।
- लोक प्रशासन में लोक/सिविल सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्र: स्थिति तथा समस्याएं; सरकारी तथा निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएं तथा दुविधाएं; नैतिक मार्गदर्शन के स्त्रोतों के रूप में विधि, नियम, विनियमन तथा अंतरात्मा; जवाबदेही एवं नीतिशास्त्रीय शासन; शासन व्यवस्था में नीतिपरक तथा नैतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण; अंतरराष्ट्रीय संबंधों तथा निधि व्यवस्था (फंडिंग) में नैतिक मुद्दे; कॉर्पोरेट शासन व्यवस्था।
- शासन व्यवस्था में ईमानदारी: लोक सेवा की अवधारणा; शासन व्यवस्था और ईमानदारी का दार्शनिक आधार, सरकार में सूचना का आदान-प्रदान और पारदर्शिता, सूचना का अधिकार, नीतिपरक आचार संहिता, आचरण संहिता, नागरिक घोषणा पत्र, कार्य संस्कृति, सेवा प्रदान करने की गुणवत्ता, लोक निधि का उपयोग, भष्टाचार की चुनौतियां।
- उपर्युक्त विषयों पर मामला संबंधी अध्ययन (केस स्टडी)।

पाठ्यक्रम में प्रयुक्त शब्दों के अभिप्राय

- नीतिशास्त्र (Ethics): मौलिक मानवीय गुणों के अनुरूप, उचित और अनुचित के विचारों पर आधारित कार्रवाई।
- सत्यनिष्ठा (Integrity): नैतिक सुदृढ़ता, निरंतर सच्चाई के मार्ग पर चलना तथा मजबूत नैतिक सिद्धांतों एवं मूल्यों के प्रति सुसंगत रहना और समझौता किए बिना इनका पालन करना।
- अभिरुचि (Aptitude): किसी व्यक्ति की अपने कार्यों और निर्णयों में नैतिक सिद्धांतों और मूल्यों को समझने और लागू करने की जन्मजात क्षमता अथवा एक निश्चित स्तर पर एक निश्चित प्रकार का कार्य करने की योग्यता।
- अभिवृत्ति (Attitude): किसी व्यक्ति का किसी चीज को देखने का नजरिया या उसके प्रति व्यवहार अथवा कार्य करने, महसूस करने या सोचने का एक तरीका, जो किसी के स्वभाव, राय, मानसिक प्रवृत्ति या अभिविन्यास आदि को दर्शाता हो।
- मानवीय मूल्य (Human Values): वे नियम, जिनके द्वारा हम उचित और अनुचित, क्या करना चाहिए और क्या नहीं, अच्छा और बुरा के बारे में निर्णय लेते हैं।
- धारणा (Persuasion): किसी को एक निश्चित स्थिति या विश्वास या कार्य पद्धति अपनाने के लिए प्रेरित करना।
- भेदभाव रहित (Impartiality): विभिन्न विचारों अथवा राय पर समान एवं निष्पक्ष रूप से व्यवहार करने का गुण।
- गैर-तरफदारी (Non-Partisanship): किसी भी राजनीतिक दल या विशेष हित समूह का समर्थन नहीं करना तथा उससे प्रभावित नहीं होना।
- निष्पक्षता (Objectivity): भावनाओं या व्यक्तिगत पूर्वाग्रह से प्रभावित हुए बिना तथ्यों एवं सूचित घटनाओं पर आधारित निर्णय लेना।
- सहानुभूति (Sympathy): दूसरों के दुख को साझा करने का मानवीय गुण।
- समानुभूति (Empathy): दूसरों के दुखों को न केवल साझा करने बल्कि समझने का मानवीय गुण।
- संवेदना (Compassion): दूसरे के दुखों को समझने और कुछ करने की इच्छा रखने का मानवीय गुण।
- सहिष्णुता (Tolerance): दूसरों के विश्वासों या मान्यताओं को पहचानने और उनका सम्मान करने की इच्छा या सम्मति।
- भावनात्मक समझ (Emotional Intelligence): अपनी भावनाओं के साथ-साथ दूसरों की भावनाओं को पहचानने और प्रबंधित करने की क्षमता। लोगों के महसूस करने और प्रतिक्रिया करने के तरीके को समझने की क्षमता तथा इस कौशल का उपयोग प्रभावी निर्णय लेने और समस्या समाधान हेतु करना।
- दुविधा (Dilemma): ऐसी स्थिति जिसमें किसी व्यक्ति के लिए दो या दो से अधिक चीजों के बीच चयन करना कठिन हो।

- अंतरात्मा (Conscience): उचित और अनुचित के संबंध में अपने स्वयं के विचारों के अनुरूप होना।
- जवाबदेही (Accountability): स्वयं द्वारा किए गए कार्यों के परिणाम की जिम्मेदारी लेना और इससे उत्पन्न होने वाले मुद्दों का त्वरित एवं निष्पक्षतापूर्ण ढंग से समाधान करना।
- भ्रष्टाचार (Corruption): बेईमानीपूर्ण लाभ हेतु विश्वासपूर्ण स्थिति अथवा पद का उपयोग (एकाधिकार + विवेक – जवाबदेही = भ्रष्टाचार)।
- ईमानदारी (Probity): निष्ठावान, सत्यनिष्ठ एवं न्यायनिष्ठ व्यक्ति होना। निष्पक्षता, जवाबदेही और पारदर्शिता के मूल्यों को लागू करना।
- नागरिक घोषणा-पत्र (Citizen's Charter): उच्च स्तरीय सेवा प्रदान करने के लिये एक सार्वजनिक संगठन द्वारा नागरिकों को दी गई वचनबद्धता।
- पारदर्शिता (Transparency): जानकारी साझा करना तथा खुले ढंग से कार्य करना। हालांकि, प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए यह जानकारी समय पर, प्रासंगिक, सटीक और पूर्ण होनी चाहिए।
- सूचना का अधिकार (Right to Information): यह सरकार से कोई भी जानकारी मांगने, किसी भी सरकारी दस्तावेज का निरीक्षण करने और उसकी प्रमाणित फोटोकॉपी की मांग करने के भारतीय नागरिक के अधिकार को संदर्भित करता है।
- आचरण संहिता (Codes of Conduct): यह किसी व्यक्ति के लिए मानदंडों, नियमों, जिम्मेदारियों तथा उचित अभ्यास को रेखांकित करने वाले नियमों का एक समूह है।
- नीतिपरक आचार संहिता (Codes of Ethics): यह सिद्धांतों का एक मार्गदर्शक है, जो पेशेवरों को ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा के साथ कार्य करने में मदद करने हेतु विकसित की जाती है।
- कार्य संस्कृति (Work Culture): किसी संगठन के भीतर और उसके कर्मचारियों के बीच प्रथाओं, मूल्यों एवं साझा मान्यताओं का एक सेट, जिसे आम तौर पर सोचने तथा कार्य करने का उचित तरीका माना जाता है, कार्य संस्कृति कहलाती है।

❖❖❁❖❖

1

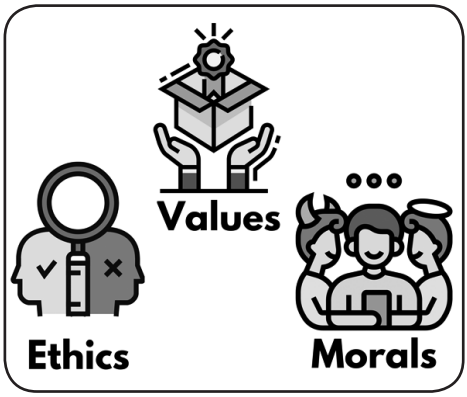

नीतिशास्त्र, मूल्य एवं नैतिकता

नीतिशास्त्र, मूल्य एवं नैतिकता शासन और लोक प्रशासन के मूलभूत स्तंभ हैं, जो व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में नैतिक निर्णय लेने की आधारशिला हैं। ये अवधारणाएं लोक सेवा के नैतिक आधार को समझने में मदद करती हैं।

- *नीतिशास्त्र, नैतिक सिद्धांतों की एक प्रणाली है, जो विशेष रूप से शासन, नेतृत्व और व्यावसायिक जिम्मेदारियों में मानव व्यवहार को निर्देशित करती है।*
- *मूल्य वे गहन विश्वास हैं जो निर्णय निर्माण एवं प्राथमिकताओं को प्रभावित करते हैं, जिनमें सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और समानुभूति शामिल हैं, जो सिविल सेवकों के लिए प्रमुख गुण हैं।*
- *नैतिकता, सामाजिक मानदंडों, दार्शनिक सोच और कानूनी सिद्धांतों के आधार पर उचित या अनुचित के बीच अंतर को परिभाषित करती है।*

ये तत्व नैतिक शासन को आकार देते हैं तथा जवाबदेही, पारदर्शिता और सार्वजनिक विश्वास सुनिश्चित करते हैं, जो संवैधानिक मूल्यों और प्रभावी प्रशासन को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

नीतिशास्त्र की अवधारणा

Ethics की उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'Ethica' से हुई है। 'Ethica' का अर्थ है- रीति, प्रचलन या आदत। इस प्रकार नीतिशास्त्र रीति, प्रचलन या आदत का व्यवस्थित अध्ययन है।

प्रचलन, रीति या आदत मनुष्य के वे कर्म हैं, जिनका उसे अभ्यास हो जाता है। दूसरे शब्दों में, ये मनुष्य के अभ्यासजन्य आचरण हैं। मनुष्य की ऐच्छिक क्रियाएं आचरण कहलाती है; अर्थात् आचरण वे कर्म हैं, जिन्हें किसी उद्देश्य या इच्छा से किया जाता है। नीतिशास्त्र इन्हीं ऐच्छिक क्रियाओं या आचरण का समग्र अध्ययन है। इसकी विषयवस्तु आचरण है। अत: इसे आचारशास्त्र भी कहा जाता है। नीतिशास्त्र का प्रमुख कार्य है, मनुष्य के ऐच्छिक कार्यों का परीक्षण करके उन्हें नैतिक-अनैतिक या उचित-अनुचित की संज्ञा देना।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अत: यह अनिवार्य है कि उसके चरित्र एवं संकल्प नैतिक मानदंडों के अनुकूल हों, ताकि उसे जीवन के परम लक्ष्य-सत् तथा शुभ की प्राप्ति हो सके। नीतिशास्त्र इसी परम लक्ष्य अर्थात् सर्वोच्च आदर्श का अध्ययन करता है।

नीतिशास्त्र क्या है?

नीतिशास्त्र मानक नियमों एवं आदर्शों द्वारा मानवीय आचरण तथा व्यवहार का नियमन, मार्गदर्शन तथा मूल्यांकन करने वाली एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसका लक्ष्य व्यक्ति और समाज का अधिकतम कल्याण है।

नैतिक दर्शनशास्त्र केवल उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारण नहीं करता, बल्कि यह उन तथ्यों की तात्पर्यता प्रदर्शित करने का प्रयास करता है, उसे बौद्धिक स्तर पर स्वीकार या खारिज करता है, उसके प्रभावों को समझता है, उसके व्यावहारिक परिणामों को देखता है और सबसे प्रमुख यह कि वह उसके अंतिम उद्देश्यों तक पहुंचता है। इस प्रकार नीतिशास्त्र को परम सुख की प्राप्ति के साधन के रूप में उचित या अनुचित के दृष्टिकोण से मानवीय क्रियाओं के व्यवस्थित अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। नीतिशास्त्र मानवीय व्यवहार के उस भाग की अच्छाई या बुराई का चिंतनशील अध्ययन है, जिसकी कुछ व्यक्तिगत जवाबदेही है।

नीतिशास्त्र से तात्पर्य किसी के नीतिशास्त्रीय मानकों के अध्ययन व विकास से भी है। दूसरे शब्दों में नीतिशास्त्र वे मानक या नियम हैं, जो आप अपने लिए निर्धारित करते हैं, जो सही या गलत के निर्धारण के प्रयास में आपका मार्गदर्शन करते हैं। नीतिशास्त्रीय मानकों में ईमानदारी, दया एवं निष्ठा जैसे सदाचारों को भी शामिल किया जाता है। इनमें अधिकार; जैसे जीवन का अधिकार, जोखिम में स्वतंत्रता का अधिकार, निजता का अधिकार को भी शामिल किया जाता है।

एक दार्शनिक विषय के रूप में, नीतिशास्त्र उन मूल्यों और दिशा-निर्देशों का अध्ययन है, जिनके साथ हम जीवन जीते हैं। इसमें इन मूल्यों और दिशा-निर्देशों का औचित्य भी सम्मिलित है। यह केवल परम्पराओं तथा प्रथाओं का अनुसरण मात्र नहीं है, वरन् इसमें सार्वभौम सिद्धांतों के प्रकाश में इन दिशा-निर्देशों के विश्लेषण व मूल्यांकन की आवश्यकता होती है।

नैतिक दर्शन के रूप में नीतिशास्त्र न केवल नैतिकता है, बल्कि नीतिशास्त्र नैतिकता, नैतिक समस्याओं तथा नैतिक निर्णयों का दार्शनिक चिंतन है। सभी धर्मों में व्यक्तियों को नैतिक व्यवहार करने की शिक्षाएं दी गई है। ये शिक्षाएं नैतिक व्यवहार का महत्वपूर्ण एवं प्रभावी स्रोत होती हैं। परन्तु धर्म तथा नीतिशास्त्र के विषय में दार्शनिकों में अत्यधिक मतभेद हैं।

कुछ दार्शनिक नीतिशास्त्र को धर्म का एक भाग मानकर उसका स्वतंत्र अस्तित्व ही स्वीकार नहीं करते। इसके विपरीत कुछ अन्य दार्शनिकों का विचार है कि नीतिशास्त्र का धर्म के साथ कोई

2

नीतिशास्त्र और मानवीय सह-संबंध

नीतिशास्त्र, मानवीय व्यवहार और अंत:क्रियाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो व्यक्तिगत और व्यावसायिक आचरण दोनों को प्रभावित करता है। यह एक न्यायसंगत समाज की नींव के रूप में काम करता है तथा व्यक्तियों को नैतिक निर्णय लेने के लिए मार्गदर्शित करता है। यह उचित और अनुचित को परिभाषित कर मानव आचरण को नियंत्रित करता है। नीतिशास्त्र और मानवीय क्रियाओं का संबंध विभिन्न आयामों में विस्तृत है, जो शासन, नेतृत्व और सामाजिक समरसता को प्रभावित करते हैं। नीतिशास्त्रीय मूल्य व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं तथा आपसी संबंधों में ईमानदारी, समानुभूति और जिम्मेदारी को बढ़ावा देते हैं। लोक सेवकों को, विशेष रूप से, सुशासन और सार्वजनिक विश्वास सुनिश्चित करने के लिए नैतिक मानकों को बनाए रखना चाहिए

3

अभिवृत्ति (ATTITUDE)

सामाजिक प्रभाव के कारण लोग व्यक्ति के बारे में तथा जीवन से जुड़े विभिन्न विषयों के बारे में एक दृष्टिकोण या अभिवृत्ति विकसित करते हैं, जो उनके अंदर एक व्यवहारात्मक प्रवृत्ति के रूप में विद्यमान रहती है। जब हम लोगों से मिलते हैं, तब हम उनके व्यक्तिगत गुणों या विशेषताओं के बारे में अनुमान लगाते हैं। अभिवृत्ति का सामान्य अर्थ किसी मनोवैज्ञानिक विषय (अर्थात व्यक्ति, समूह, विचार, वस्तु, स्थिति या कुछ और जिसके बारे में भाव आ सके) के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक भाव की उपस्थिति है।

अभिवृत्ति की सभी परिभाषाएं इस बिंदु पर एकमत हैं कि अभिवृत्ति मन की एक अवस्था है। यह किसी विषय (जिसे अभिवृत्ति-विषय कहा जाता है) के संबंध में विचारों का एक पुंज है, जिसमें एक मूल्यांकनपरक विशेषता (सकारात्मक, नकारात्मक अथवा तटस्था का गुण) पाई जाती है। इससे संबद्ध एक सांवेगिक घटक होता है तथा अभिवृत्ति-विषय के प्रति एक विशेष प्रकार से क्रिया करने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है।

4

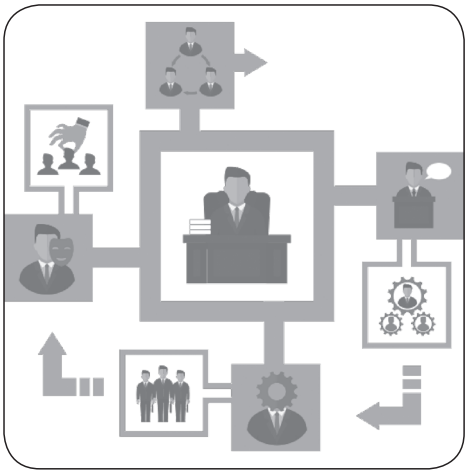

सिविल सेवा अभिरुचि और बुनियादी मूल्य

सिविल सेवा के लिए अभिरुचि तथा बुनियादी मूल्य, सत्यनिष्ठा, भेदभाव रहित तथा गैर-तरफदारी, निष्पक्षता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव तथा कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति, सहिष्णुता व संवेदना को संदर्भित करता है।

लोक सेवकों के लिए नैतिक मूल्यों एवं मानकों का निर्धारण एक कठिन कार्य है। इस प्रक्रिया की अपनी कुछ सीमाएं हैं और यह स्पष्ट है कि विश्व के प्रत्येक क्षेत्र या फिर राष्ट्र का विकास एक समान नहीं हुआ है। इनके सामाजिक, सांस्कृतिक प्रतिमान एवं ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया भिन्न-भिन्न रही है।

इन जटिल परिस्थितियों में लोक सेवकों को अपना काम करना पड़ता है। इन दुविधाजनक क्षणों में मूल्य व मानक ही वे सूत्र हैं, जो उनके व्यवहार को सही दिशा देते हैं, उनका मार्गदर्शन करते हैं तथा परिस्थितिजन्य आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य करने में अथवा निर्णय लेने में मदद करते हैं।

सत्यनिष्ठा, भेदभाव रहित तथा गैर-तरफदारी

सिविल सेवकों के विशेष दायित्व होते हैं, क्योंकि वे समुदाय द्वारा सौंपे गए संसाधनों के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार होते हैं। वे समुदाय को सेवाएं उपलब्ध कराते हैं और महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं, जो समुदाय के जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करते हैं। समुदाय को यह उम्मीद करने का अधिकार है कि सिविल सेवक निष्पक्ष रूप से उचित और कुशलतापूर्वक कार्य करें। यह जरूरी है कि समुदाय सिविल सेवक निर्णय-निर्माण प्रक्रिया की निष्ठा में भरोसा और विश्वास करें।

सिविल सेवा के अन्दर यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उनके निर्णय और कार्य तत्कालीन सरकार की नीतियों और उन मानकों को परिलक्षित करें, जिसकी समुदाय सरकारी सेवकों के रूप में उनसे उम्मीद करता है। यह उम्मीद कि सिविल सेवा उत्तरोत्तर सरकारों की सेवा करने में एकसमान पेशेवरशीलता, प्रतिक्रियाशीलता और निष्पक्षता के मानक बनाए रखेंगे। लोकतंत्र में एक कुशल सिविल सेवकों में मूल्यों का एक समूह होना चाहिए, जो उसे अन्य व्यवसायों से अलग करें।

एकीकरण, सरकारी सेवा के प्रति समर्पण, निष्पक्षता, राजनीतिक तटस्थता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण, कमजोर वर्ग के लोगों के प्रति सहिष्णुता एवं सहानुभूति, एक कुशल सिविल सेवक की विशेषताएं समझी जाती हैं। कुछ देशों में इन विशेषताओं को कानूनों में समाहित किया गया है, उदाहरणार्थ ऑस्ट्रेलिया और कुछ अन्य देशों में उन्हें संबंधित संविधानों में शामिल किया गया है।

सिविल सेवा संहिता

सिविल सेवा संहिता में उल्लेखित मूल्यों का अर्थ-

- 'कर्त्तव्यनिष्ठा' का अर्थ, सार्वजनिक सेवा के दायित्वों को अपने खुद के हितों से ऊपर रखना है।
- 'ईमानदारी' का अर्थ सच्चा और खुला होना है।
- 'उद्देश्यपरकता' का अर्थ अपनी सलाह और निर्णयों को साक्ष्य के कठोर विश्लेषण पर आधारित करना है।
- 'निष्पक्षता' का अर्थ निष्पक्ष रूप से मामले के गुणावगुणों के अनुसार कार्य करना तथा उतनी ही अच्छी तरह के भिन्न-भिन्न राजनीतिक सिद्धांतों वाली सरकार की सेवा करना है।

इन महत्वपूर्ण मूल्यों से सरकार को समर्थन प्राप्त होता है तथा सिविल सेवाओं द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों में उच्चतम संभव मानकों की उपलब्धि सुनिश्चित होती है। बदले में इससे सिविल सेवक को मंत्रियों, संसद, जनता और इसके ग्राहकों का सम्मान प्राप्त करने तथा उसे बनाए रखने में मदद मिलती है। सिविल सेवकों से अपेक्षित कर्त्तव्यनिष्ठा और वफादारी का उल्लेख करने के अलावा संहिता में संसद या जनता को धोखा देना, पदों का दुरुपयोग और गोपनीय सूचना का अनाधिकृत प्रकटन निषिद्ध है। संहिता में उपयुक्तता और आत्मज्ञान के मामलों के संबंध में स्वतंत्र सिविल सेवा आयुक्त के समक्ष अपील करने की व्यवस्था है, यदि प्रश्नगत समस्या का समाधान विभाग के अन्दर न हो।

सार्वजनिक सेवा विधेयक 2007 के मसौदे में सार्वजनिक सेवा और सरकारी सेवक अपने कार्यों के निपटान में निम्नलिखित मूल्यों द्वारा मार्गदर्शित होने का उल्लेख करते हैं:

1. देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव को कायम रखना।
2. संविधान और राष्ट्र के कानून के प्रति निष्ठा।
3. उद्देश्यपरकता, निष्पक्षता, ईमानदारी, विवेक, विनम्रता और पारदर्शिता; तथा
4. पूर्ण सत्यनिष्ठा बनाए रखना।

5

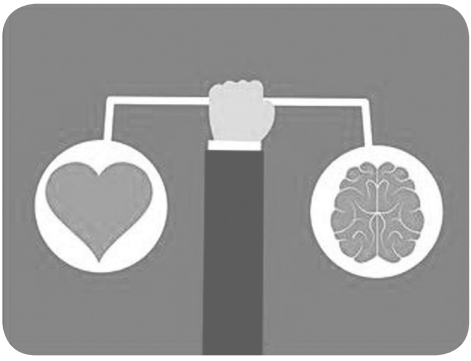

भावनात्मक समझ

भावनात्मक समझ से तात्पर्य व्यक्ति का अपने तथा दूसरों के मनोभावों को समझना, उन पर नियंत्रण करना और अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उनका सर्वोत्तम उपयोग करना है। भावनात्मक समझ दूसरों से व्यवहार करते समय व्यक्ति के संवेगों और अभिव्यक्तियों को नियंत्रित करती है, ताकि शांति और सामंजस्य विकसित किया जा सके।

भावनात्मक समझ आधुनिक तंत्रिका विज्ञान में प्रचलित दृष्टिकोण को दर्शाता है, जिसमें भावनात्मकता को तर्कसंगत सोच में बाधाओं या व्यवधानों के बजाय, इन्हें हमारे परिवेश के बारे में उपयोगी विवरणों के स्त्रोत के रूप में संरचित किया जाता है।

भावनाएं: भावनाएं एक व्यक्ति के मन की अवस्था है, जो कि आतंरिक और बाह्य प्रभावों से अंत:क्रिया करता है, की जटिल मनोसामाजिक प्रक्रिया का अनुभव है।

प्लूटचिक के अनुसार 8 प्राथमिक भावनाएं- गुस्सा, दृढ़, दु:खी होना, घिन आना, आश्चर्य, जिज्ञासा, स्वीकृति और खुशी हैं।

बुद्धिमत्ता (समझ): इसका आशय स्थिति को समझने, सविवेक चिंतन करने तथा किसी चुनौती के सामने होने पर उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी माध्यम से उपयोग करने की व्यापक क्षमता से है।

भावनात्मक समझ

विकासमान जीव विज्ञान और तंत्रिका-विज्ञान के प्रमाण यह बताते हैं कि वास्तव में भावनाएं कहीं अधिक कुशाग्र होती हैं और समूह बुद्धि तथा सामाजिक पूंजी के निर्माण में भावनात्मक समझ या बुद्धिमत्ता (EI- Emotional Intelligence), बुद्धिलब्धि (IQ-Intelligence Quotient) की तुलना में अधिक प्रभावी होती है। बैठकों एवं अन्य सामूहिक गतिविधियों में, जब लोग एक-दूसरे से सहयोग कि लिए आते हैं, उनमें सामूहिक आईक्यू, उपस्थित लोगों के बौद्धिक ज्ञान एवं कौशल का कुल जोड़, प्रबल होता है।

वास्तव में सामूहिक बुद्धि का सबसे महत्वपूर्ण जो तत्व होता है, वह औसत या सर्वोच्च आईक्यू नहीं होता, वरन् भावनात्मक बुद्धिमत्ता या समझ होता है। उस समूह में मौजूद निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाला एकमात्र व्यक्ति संपूर्ण समूह के सामूहिक आईक्यू को कमजोर कर सकता है। एक उदाहरण के द्वारा इसे समझा जा सकता है:

''मान लीजिए कि एक भयंकर प्राकृतिक आपदा घटित हो गई है। राहत एवं पुनर्वास के लिए केन्द्र एवं राज्य तथा विभिन्न विभागों के मध्य बेहतर समन्वयन की जरूरत है। संक्षेप में यह कि निर्णय लोगों द्वारा लिया जाना है। कल्पना कीजिए कि सारे अधिकारी भविष्य की रणनीति पर बैठक में विचार कर रहे हैं। जैसा कि ऊपर कहा गया है कि समूह में शामिल सभी लोगों का संयुक्त बुद्धि व कौशल, सामूहिक आईक्यू है। तभी किसी विभाग के प्रधान की क्रोध की भावना (निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता) उबल पड़ती है और गरमा-गरम बहस शुरू हो जाती है। इससे पूरी बैठक की दिशा बदल जाती है और चर्चा अपनी दिशा खो देता है। यहां एक व्यक्ति की निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता ने उच्च सामूहिक बुद्धि यानी ग्रुप आईक्यू पर प्रभावी होते हुए विमर्श को बिगाड़ दिया।

भावनाओं के बौद्धिक निर्देशन के बिना मनुष्य नम्य होकर परिस्थिति का प्रत्युत्तर नहीं दे सकता है। सही समय एवं सही जगह का फायदा नहीं उठा सकता, अस्पष्ट एवं विरोधाभासी संदेशों की भावना को नहीं समझ सकता। परिस्थिति के अलग-अलग तत्वों की महत्ता को नहीं पहचान सकता, परिस्थितियों के बीच की समानताओं का पता नहीं लगा सकता।

पुरानी अवधारणाओं एवं नयी अवधारणा का एकीकरण कर नया मार्ग नहीं बन सकता या फिर कोई अनूठा मार्ग विकसित नहीं कर सकता। भावनाओं के मार्गदर्शन के बिना हम विवेकी नहीं हो सकते।

भावनात्मक समझे वाले व्यक्ति:

- खुद पर हंस सकते हैं।
- अपने सबल पक्षों का कहां इस्तेमाल करें और अपनी कमजोरी की क्षतिपूर्ति कैसे करें, के बारे में जानते हैं।
- दूसरों की भावनाओं का ध्यान रखते हैं और उनके साथ सहानुभूति रखते हैं।
- नीतिशास्त्रीय कार्य करते हैं तथा सत्यनिष्ठा और विश्वसनीयता के जरिये विश्वास का निर्माण करते हैं।
- खुद की गल्तियों को स्वीकार करते हैं और उनसे सीखते हैं।
- नए विचारों एवं नई सूचनाओं के साथ सहज होते हैं।
- समूह की भावनात्मक धाराओं को सुनने तथा मजबूत संबंधों को जानने में कुशल होते हैं।
- समझौता कर सकते हैं एवं मतभेदों को सुलझा जा सकती हैं।
- दूसरे लोगों को सुनते हैं और यह जानते हैं कि प्रभावी ढंग से कैसे संचार किया जाये।

6

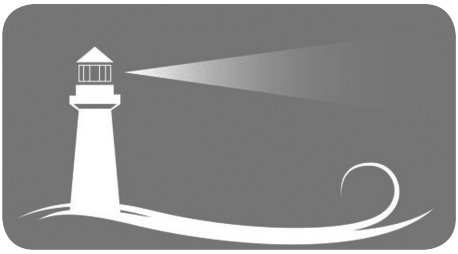

भारत तथा विश्व के नैतिक विचारकों तथा दार्शनिकों के योगदान

'नैतिक' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है- संकुचित एवं व्यापक। संकुचित अर्थ में 'उचित' को नैतिक कहते हैं तथा 'अनुचित' को अनैतिक। वृहत् या व्यापक अर्थ में 'नैतिक' का अर्थ है नैतिक गुणसंपन्न। जिन क्रियाओं का नैतिक निर्णय हो सके तथा जिन्हें उचित या अनुचित, पाप या पुण्य कहा जा सके, उन्हें नैतिक कर्म कहते हैं।

नैतिक कर्मों को ऐच्छिक कर्म (Voluntary Actions) भी कहते हैं। वैसा कर्म जो चेतन रूप से इच्छा या चुनाव करके किया जाता है, उसे ऐच्छिक कर्म कहते हैं। उन कर्मों के संपादन में मनुष्य का इच्छा-स्वातंत्र्य रहना आवश्यक है। जब कोई व्यक्ति दबाव में आकर कर्म करता है, तब उसके कर्म को ऐच्छिक कर्म नहीं कहा जा सकता है। नैतिक निर्णय के अंतर्गत सभी ऐच्छिक क्रियाएं आ जाती हैं। नैतिक कर्म का एक यह महत्वपूर्ण लक्षण है कि इसका कर्त्ता सदैव एक विवेक संपन्न व्यक्ति होना चाहिए।

दर्शन (Philosophy)

दर्शन मनुष्य का बौद्धिक प्रयास है, जो तर्क संगत और निष्पक्ष तरीके से किया जाता है। यह जीवन की कला है। इसके द्वारा जीवन के अर्थ और आधारभूत मूल्यों व मान्यताओं को समझने का प्रयास किया जाता है। दर्शन परम सत्य की खोज अथवा अनुसंधान करता है। यह हमारे सभी प्रकार के अनुभवों से संबंधित मूल तत्वों अथवा आधारभूत मान्यताओं की तर्कसंगत एवं निष्पक्ष परीक्षा करता है और उसके संबंध में केवल तर्क के आधार पर अपना मत निश्चित करता है। इसमें चिंतन, तर्क और विश्लेषण का सर्वप्रमुख स्थान होता है। यह जीवन और जगत (ब्रह्माण्ड) के वास्तविक स्वरूप को समझने का प्रयास करता है।

दर्शन ने मुख्यत: मनुष्य के इसी उद्देश्य की पूर्ति में सहायता की है। दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति यूनानी भाषा के 'फिलॉसफी' तथा 'सोकिया' इन दो शब्दों से हुई है, जिनका अर्थ क्रमश: 'प्रेम' और 'ज्ञान' अथवा विद्या है। इस प्रकार शब्दार्थ की दृष्टि से 'फिलॉसफी' का अर्थ है 'विद्यानुराग' या 'ज्ञान के प्रति प्रेम'। इस अर्थ से भी यही ध्वनित होता है कि फिलॉसफी जीवन के शाश्वत मूल सत्यों के ज्ञान के प्रति अनुराग है।

भारतीय संदर्भ में 'दर्शन' संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है 'देखना' या 'खोजना'। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से 'दर्शन' का अर्थ है 'सत्य का अनुसंधान' अथवा 'सत्य की खोज'। जो निष्पक्ष विचार एवं तर्क के आधार पर जीवन के मूल सत्यों का अनुसंधान करता है, वही दर्शन है। भारत में दर्शन की उत्पत्ति जगत और जीवन को जानने की प्रबल एवं स्वाभाविक प्रवृत्ति के फलस्वरूप हुई है। भारतीय दर्शन के बीज हमें उपनिषदों में मिलते हैं, जो हिन्दुओं का प्रसिद्ध धर्मग्रंथ है।

आधुनिक नैतिक दर्शन (Modern Moral Philosophy)

20वीं शताब्दी में नैतिक सिद्धांत व मान्यताएं पहले से अधिक जटिल हो गयी हैं; क्योंकि इसकी विषयवस्तु अब किसी कार्य या व्यवहार के औचित्य या अनौचित्य के परीक्षण तक सीमित नहीं रह गई है। अब तो नैतिक प्रतिमानों व मूल्यों के कई स्तर उभर कर आए हैं और आधुनिक नैतिक दर्शन अब इन नये प्रतिमानों की मीमांसा में अधिक रुचि लेने लगा है। डब्ल्यू.डी. रॉस के विचार में तो पारम्परिक नैतिक सिद्धांतों के आधार पर अब किसी कार्य या व्यवहार को सीधे तौर पर सही या गलत नहीं ठहराया जा सकता।

पारम्परिक नैतिक मान्यताओं के आधार पर उपकार, ईमानदारी अथवा न्याय जैसे मूल्यों के विचार से किसी कार्य के बारे में सिर्फ यह बताया जा सकता है कि उनके सही या गलत की संभावनाएं क्या है? कुछ दार्शनिकों का तो यह मानना है कि अब नैतिक सिद्धांतों को विभिन्न संदर्भों में स्पष्ट रूप से परिभाषित करना भी संभव नहीं रह गया है। तात्पर्य यह है कि वर्तमान संदर्भ में ये सिद्धांत अब बहुत स्पष्ट नहीं रह गए; बल्कि इनसे दुविधा की स्थिति उत्पन्न होने लगती है।

कुछ अन्य दार्शनिक तो मानकीय नीतिशास्त्र और इससे जुड़े सिद्धांतों की बात ही नहीं करते; बल्कि वे वर्णनात्मक तथा व्यावहारिक नीतिशास्त्र पर ही ज्यादा जोर देते हैं; क्योंकि वर्तमान में अब ये ही प्रासंगिक रह गए हैं। दार्शनिकों का एक ऐसा वर्ग भी है, जो अभी भी नैतिक सिद्धांतों की महत्ता पर जोर देते हैं। अपने पक्ष को मजबूत करने के लिए इनका तर्क यह है कि किसी व्यक्ति की नैतिक मनोवृत्ति को समझने के लिए नैतिक सिद्धांतों व मान्यताओं को आदर्श मानकर चलने की आवश्यकता ही नहीं है।

7

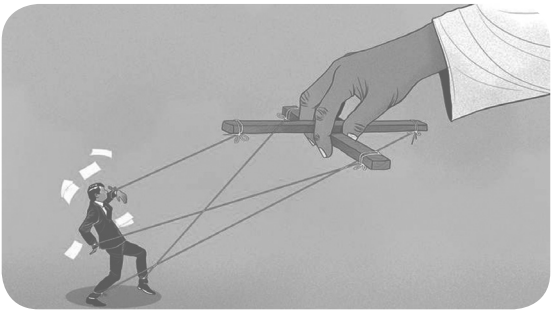

लोक प्रशासन में लोक/सिविल सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्र

लोक प्रशासन सरकार की कार्यपालिका शाखा का प्रतिनिधित्व करता है। यह मूलत: सरकारी गतिविधियों के प्रभावकारी निष्पादन से संबंधित तंत्र और उसके प्रावधानों का अध्ययन है। प्रशासन की परिभाषा कुछ सामान्य लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु किए गए सहकारी, मानवीय प्रयासों के रूप में दी जाती है। लोक प्रशासन, प्रशासन का वह प्रकार है, जो एक विशेष राजनीतिक व्यवस्था में संचालक का काम करता है। यही वह साधन है, जो नीति निर्माताओं द्वारा किए गए नीतिगत निर्णयों और कार्य संपन्न करने की पूरी योजना के बीच संबंध स्थापित करता है।

लोक प्रशासन का काम उद्देश्यों और लक्ष्यों को निर्धारित करना, विधायिका तथा नागरिक संगठनों का समर्थन प्राप्त करने के लिए उन्हें साथ लेकर काम करना, संगठनों की स्थापना करना तथा उनका पुनरावलोकन करना, कर्मचारियों को निर्देश देना एवं निरीक्षण करना, नेतृत्व प्रदान करना आदि है। यह वह साधन है, जिसके द्वारा सरकारी उद्देश्यों और लक्ष्यों को वास्तविक रूप प्रदान किया जाता है।

लोक प्रशासन से जुड़ा हुआ 'लोक' शब्द इस अध्ययन शाखा को खास विशेषताएं प्रदान करता है। इस शब्द को सामान्यत: सरकार के रूप में समझना चाहिए। अत: लोक प्रशासन का अर्थ हुआ सरकारी प्रशासन। इसमें नौकरशाही पर विशेष बल दिया जाता है। सामान्य बातचीत में लोक प्रशासन से यही अर्थ लगाया जाता है। यदि 'लोक' शब्द का व्यापक अर्थ लगाया जाए तो ऐसा कोई भी प्रशासन, जिसका 'लोक' पर व्यापक प्रभाव पड़ता हो, इस अध्ययन-शाखा की सीमा के अंतर्गत माना जाएगा। नौकरशाही के कार्यों को विस्तृत करने के क्रम में सरकार के बढ़ते हुए महत्व के कारण लोक प्रशासन बहुत ही ज्यादा जटिल और विशेषीकृत होता जा रहा है।

लोक सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्रः स्थिति तथा समस्याएं

लोकतंत्र एक सत्ता की अवस्था नहीं है। यह एक नैतिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के एक भाग के रूप में एक परिपक्व लोकतंत्र की ओर बढ़ते देशों ने मूल्यों और सिद्धन्तों को ज्यादा से ज्यादा विस्तृत धारणा कायम की है। यहां तक कि अत्यधिक उच्च विकास वाले देशों में ये सिद्धान्त भ्रष्टाचार स्कैण्डल का सामना कर रहे समाज के रूप से अचानक ही ज्यादा प्रसरणशील बन जाते हैं। व्यवहार जो कि पूर्व में स्वीकारणीय समझा गया था सिद्धान्तों के नजरिये से देखें जाने की वजह से उसकी भर्त्सना की जाती है।

सिद्धान्तों का यह नजरिया कार्यों को प्रायः ऐसे व्यक्ति के अस्वीकार्य व्यवहार के रूप में देखता है, जो लोकहितों का अस्थायी प्रबंधक है। जब मूल्य और सिद्धान्त लोक सेवा का मुख्य बिन्दु होते हैं, तो वे अपूर्वाभासी घटनाओं के लिए मार्गदर्शन उपलब्ध कराने का कार्य करते हैं।

लोक प्रशासन में 'नैतिकता' परंपरागत मूल्यों और आचार संहिता से जुड़ी हुई होती है। नोलन समिति ने लोकजीवन के सात सिद्धान्त तय किए हैं, समिति का मानना था कि सभी प्रकार की लोक सेवाओं में लागू किया जाना चाहिए। ये हैं-

(i) **निःस्वार्थपरकताः** लोक कार्यालयों के कर्मचारियों को पूरी तरह जनहित के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कार्य करना चाहिए। उन्हें अपने लिए, अपने परिवार या मित्रों के लिए वित्तीय या अन्य प्रकार के लाभ पाने की आशा से कार्य नहीं करना चाहिए।

(ii) **सत्यनिष्ठाः** लोक कार्यालयों कि कर्मचारियों को अपने संस्थान के बाहर किसी व्यक्ति या संगठन के लिए वित्तीय या अन्य बाध्यताओं में नहीं बंधना चाहिए, जो उनके आधिकारिक कर्त्तव्य पालन को किसी न किसी तरह से प्रभावित कर सके।

(iii) **वस्तुनिष्ठताः** कार्यों जैसे- कार्यालयी नियुक्तियां करना, ठेके आवंटित करना तथा पुरस्कार या लाभों के लिए व्यक्ति विशेष की संस्तुति करना आदि के लिए निर्णय लेते समय लोक अधिकारियों को वरीयता क्रम को प्राथमिकता देनी चाहिए।

(iv) **जवाबदेहिताः** लोक-अधिकारी जनता के प्रति लिए गए अपने निर्णयों और किए गए कृत्यों के लिए जवाबदेय होते हैं तथा इन्हें अपने कार्यालय में होने वाली किसी भी जांच में पूरे समर्पण के साथ सहयोग देना चाहिए।

(v) **खुलापनः** लोक-अधिकारियों को अपने द्वारा लिए गए निर्णयों और कृत्यों के लिए जितना संभव हो सके उतना खुला दृष्टिकोण रखना चाहिए। उन्हें अपने द्वारा लिए गए निर्णयों के लिए सुख देना चाहिए तथा व्यापक लोकहितों की हानि होने की संभावना पर ही सुचनाओं को प्रतिबंधित करना चाहिए।

(vi) **ईमानदारीः** लोक-अधिकारियों का यह कर्त्तव्य होता है कि वे उनके सार्वजनिक कर्त्तव्यों से संबंधित निजी हितों की घोषणा करें तथा लोकहितों की सुरक्षा के रास्ते में उभरे द्वन्द्वों/संघर्षों को सुलझाने के लिए कदम उठाए।

(vii) **नेतृत्वः** लोक-अधिकारियों को इन सिद्धान्तों को नेतृत्व और उदाहरण देकर संदर्भित और संवर्द्धित करना चाहिए।

नोटः समतामूलक समाज का निर्माण तभी किया जा सकता है, जब सार्वजनिक जीवन में निष्पक्षता के उच्चतम सिद्धांतों का पालन किया जा सके।

वर्तमान समय में अब्राहम लिंकन के शब्द बहुत प्रसांगिक है कि, ''लगभग सभी पुरुष विपरीत परिस्थितियों के विरुद्ध खड़े हो सकते हैं, लेकिन यदि आप किसी पुरुष के चरित्र का परीक्षण करना चाहते हैं, तो उसे शक्ति दें।''

8

अंतरराष्ट्रीय संबंध और नैतिकता

अंतरराष्ट्रीय नैतिकता का अर्थ, राष्ट्रों के बीच संबंधों के नियमन हेतु नैतिकता या आचार संहिता से है। इसके अंतर्गत वे नैतिक सिद्धांत शामिल हैं, जो अनेक अंतरराष्ट्रीय कानूनों के प्रमुख स्त्रोत और उनके औचित्य का निर्धारण करते है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के बीच पारस्परिक संबंधों एवं हर प्रकार के आदान-प्रदान का वैश्विक समुदाय से प्रत्यक्ष संबंध होता है। अगर ये संबंध अच्छे हों तो यह मानव सभ्यता के लिए हितकारी साबित होता है। परंतु अंतरराष्ट्रीय संबंधों में कटुता, असहयोग और शत्रुतापूर्ण भावनाओं का प्रवेश हो जाए तो यह वैश्विक समाज के लिए हानिकारक परिणाम लाता है। अंतरराष्ट्रीय नैतिकता की जब हम बात करते हैं, तो उसका अभिप्राय इन्हीं तथ्यों से है, जिनसे वैश्विक समाज अनुकूल या प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है।

अंतरराष्ट्रीय नैतिकता ही वह दृष्टि प्रदान करती है, जिससे यह पता चलता है कि दो देशों के बीच कैसा बर्ताव रखते हैं तथा एक देश के द्वारा किस तरह किसी दूसरे देश को हानि पहुंचायी जा रही है। अत: अंतरराष्ट्रीय नैतिकता वह प्रयास है, जिसके माध्यम से व्यक्ति और राष्ट्र अपनी सक्रिय भागीदारी द्वारा एक स्वस्थ और बेहतर अंतरराष्ट्रीय समुदाय के निर्माण व विकास में अपना योगदान प्रस्तुत करता है। इस दिशा में संयुक्त राष्ट्र संघ की भिन्न-भिन्न एजेंसियों द्वारा अपनी उपस्थिति एवं कार्यों से कुछ सार्वभौमिक सिद्धांतों को प्रोत्साहन दिया जाता है। इन सिद्धांतों का संबंध किसी एक देश या फिर किसी राष्ट्र विशेष में प्रचलित सिद्धांतों से नहीं होता, बल्कि राष्ट्र और राज्य की सीमाओं से परे जाकर इन सिद्धांतों द्वारा एक स्वस्थ वैश्विक समाज की स्थापना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया जाता है।

9

शासन व्यवस्था में ईमानदारी

ईमानदारीपूर्वक अपने कर्त्तव्य का पालन नैतिक आचरण का प्रमाण है। यहां ईमानदारी का अर्थ व्यापक है, जिसमें न्यायनिष्ठा, सत्यनिष्ठा तथा स्पष्टवादिता जैसे सद्‌गुणों को भी शामिल किया जाता है। सरकारी कर्मचारियों तथा एजेंसियों के 'ईमानदार' होने का मतलब सिर्फ भ्रष्टाचार से दूर रहना ही नहीं है। अगर लोक सेवक ईमानदार है तो इसका अर्थ यह है कि उन्हें सत्यता, तटस्थता, जवाबदेयता तथा पारदर्शिता जैसे नैतिक मूल्यों का भी अनुसरण करना है।

ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा का एक अर्थ और भी है। इस अर्थ के अनुसार ईमानदार वही है, जिसे किसी तरह से भ्रष्ट न बनाया जा सके। अभिप्राय यह है कि लोक सेवक अगर व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति सचेत हैं तो उसे भ्रष्ट नहीं बनाया जा सकता। ईमानदारी को इस रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है कि व्यक्ति अगर नैतिक संहिता का पालन कर रहा है और खासकर वित्तीय और व्यावसायिक मामलों में सत्यनिष्ठा का पालन कर रहा है तो इसका अर्थ है कि वह सत्यनिष्ठ है।

सरकारी क्षेत्र में ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा सुनिश्चित करना प्रत्येक लोक सेवक का कर्त्तव्य है। यह प्रशासन के प्रत्येक स्तर में यथा कार्यप्रणाली, पद्धति एवं आचरण में परिलक्षित होना चाहिए; ताकि प्रशासन में नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित किया जा सके।

10

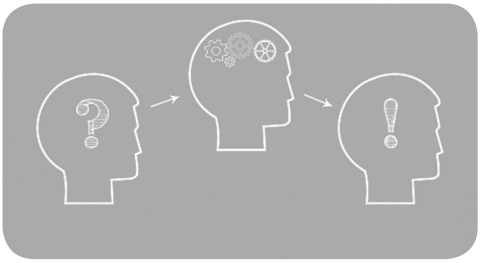

लेक्सिकन ऑफ केस स्टडी

आज सिविल सेवा राजनीतिक हस्तक्षेप, कमजोर आधार तथा उचित कार्य वातावरण के अभाव के रूप में कई चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐसे में सैद्धान्तिक अध्ययन की अपनी सीमाएं स्पष्ट हो जाती हैं। अतः संघ लोक सेवा आयोग द्वारा यह निर्णय लिया गया कि बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में सिविल सेवा परीक्षा में उन पद्धतियों को शामिल किया जाए, जो अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो तथा जिनसे नौकरशाही का ऐसा वर्ग तैयार हो, जो केवल किताबी ज्ञान में महारत न रखता हो, अर्थात् नौकरशाही से रोज वास्ता पड़ने वाले विषयों का भी व्यावहारिक ज्ञान हो। यह पुस्तक भी सिविल सेवा परीक्षा में आए बदलाव को ध्यान में रखकर तैयार की गई है, जिनमें कई ऐसे 'Terms' हैं, जिन्हें समझने में पाठकों को कठिनाई हो सकती है। केस स्टडी मॉडल एक ऐसा माध्यम है, जिसके सहारे उन 'Terms' को सरलीकृत किया जा सकता है, ताकि उन्हें प्रासंगिक संदर्भ से जोड़कर बृहद परिप्रेक्ष्य में समझा जा सके।

नीचे दिए गये अनुभाग में हमने उद्देश्यपूर्ण तरीके से यह प्रस्तुत किया है कि केस स्टडी के प्रश्नों को कैसे हल किया जाता है। केस स्टडी, किसी मामले के बेहतर प्रबंधन से संबंधित शिक्षाशास्त्र कहा जाता है। इसके अलावा कुछ लेख भी दिए गये हैं, जो केस स्टडी के प्रश्नों को सही समझ विकसित करने एवं बेतरीन तरीकों से सुलझाने में मदद करेंगे।

11

केस स्टडीः पूर्वावलोकन एवं संक्षिप्त विश्लेषण

(सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र IV 2020-2024)

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा का सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र IV वास्तविक जीवन के शासन परिदृश्यों में उम्मीदवारों के नैतिक तर्क, निर्णय निर्माण और समस्या-समाधान कौशल का मूल्यांकन करता है। इसके अंतर्गत केस स्टडीज के माध्यम से अभ्यर्थी की पारदर्शिता, जवाबदेही, भ्रष्टाचार, सामाजिक न्याय और लोक प्रशासन से संबंधित मुद्दों के निष्पक्षता और व्यावहारिकता के साथ प्रबंधन की क्षमता का परीक्षण किया जाता है। विगत वर्षों की केस स्टडी का विश्लेषण करने से उम्मीदवारों को नैतिक दुविधाओं के प्रति एक संरचित दृष्टिकोण विकसित करने और अपने प्रशासनिक निर्णय को परिष्कृत करने में मदद मिलती है। यह जटिल परिस्थितियों में सुदृढ़, नैतिक निर्णय लेने की उनकी क्षमता को बढ़ाता है।

12

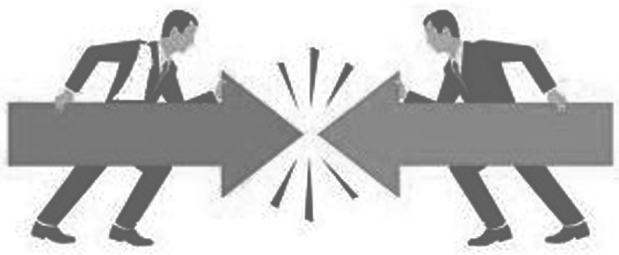

प्रशासन में हितों का संघर्ष/टकराव
(CONFLICT OF INTEREST & CONFLICT IN ADMINISTRATION)

संघर्ष के विश्लेषणात्मक सिद्धांत का लक्ष्य बदलाव, विधि, नीति और तकनीक के बीच संघर्ष-निवारण की समझ को विकसित करना है। यह लोगों को समझ, व्याख्या, विश्लेषण और संघर्ष के स्वरुप की घोषणा और निवारण के यंत्रों को विश्लेषित करने योग्य बनाता है।

लूमिस और लूमिस ने अवलोकन किया कि "संघर्ष मानव संबंधों में हमेशा रहने वाली एक पद्धति है"। संघर्ष सामाजिक गति, सामाजिक तंत्र और राजनीतिक विकास का एक अभिन्न हिस्सा है। मैक ने सुझाव दिया कि "संघर्ष को व्यवस्थित और शक्तिशाली सामूहिक सीमा, समूह की भिन्नताओं के लिए योगदान और बढ़ती हुई सामूहिक निकटता और एकता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। वे कहते हैं, संघर्ष समूह के निर्माण को विकसित करते हैं। संघर्ष समूह को नष्ट भी कर सकते हैं, ये दोनों ही बात सत्ता या संगठनों की शक्तियों के उत्तर-चढ़ाव के कारण और अंत में एक पार्टी के संघर्ष में समाप्त हो जाने से होती है।

13

व्यावसायिक नीतिशास्त्र

समकालीन विश्व में, संपत्ति और रोजगार सृजन करने में व्यवसाय (कॉर्पोरेट्स) की बढ़ती भूमिका और साथ ही बढ़ते व्यावसायिक धोखाधड़ी; जलवायु, पर्यावरणीय स्थिरता और मानव पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव के कारण व्यावसायिकों द्वारा पालन की जाने वाली नैतिकता का अध्ययन करना आवश्यक हो गया है।

व्यावसायिक नैतिकता संभावित विवादास्पद विषयों के संबंध में उचित व्यावसायिक नीतियों और प्रथाओं का अध्ययन करती है, जिसमें व्यावसायिक प्रशासन, अंदरूनी व्यापार, रिश्वतखोरी, भेदभाव, व्यावसायिक सामाजिक जिम्मेदारी, प्रत्ययी जिम्मेदारियां, और बहुत कुछ शामिल हैं। यह अध्याय व्यावसायिक प्रशासन, कामकाज, घोटालों आदि के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

14

उद्धरण और कथन

ज्ञान अर्जित करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्रयास करना होता है। दूसरे लोग ज्ञान को अर्जित करने में मददगार जरूर हो सकते हैं। न्याय दर्शन के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के साधानों पर संक्षेप में चर्चा के दौरान हमने देखा कि न्याय दर्शन मुख्य रूप से प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द को ज्ञान अर्जित करने के साधान के रूप में देखता है।

इस दुनिया और इसके बारे में होने वाले ज्ञान के बारे में दुनिया की तमाम सभ्यताएं बहुत पहले से विचार करती रही हैं। समस्याएं लगभग वही थीं और प्रत्येक सभ्यता में उन पर विचार हो रहा था। अतः इस दुनिया के बारे में अलग-अलग देशों और सभ्यताओं में हुए दार्शनिक चिन्तन को जानना एक दिलचस्प कहानी की तरह है।

15

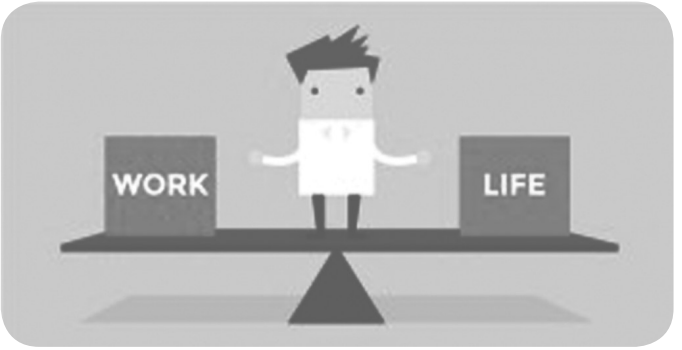

नैतिक मुद्दे

हम अपने दैनिक जीवन में कुछ नैतिक गिरावट (Ethical Lapses) को लगभग हर आयाम में पाते हैं, जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता होती है। समाचार पत्रों में हर दिन भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, घोटाले, खेलों में डोपिंग, अपराध आदि से संबंधित समाचार मौजूद रहते है। इस तरह की घटनाएं हर रोज घटित होने के कारण इतनी आम हो गयी कि अब यह सवाल किया जाने लगा है कि, क्या कोई नैतिक रूप से कार्य करता है?

नैतिकता का अध्ययन हमें जीवन से जुड़े इन्हीं वास्तविक मुद्दों पर एक स्पष्ट दृष्टिकोण देता है, साथ ही यह हमें तर्कों पर पहुंचने और उन्हें जीवन में लागू करने में भी मदद कर सकता है। नैतिक सिद्धांत के आधार पर निरंतर सोचने से दुनिया से जुड़े मुद्दों के बारे में हमारी राय परिवर्तित हो सकती है।

इस अध्याय में, हम अपने दैनिक जीवन के साथ-साथ वैश्विक नैतिक चिंताओं से संबंधित कुछ सामान्य नैतिक मुद्दों को उपलब्ध करा रहे हैं। इस तरह के मुद्दे नैतिकता को जीवन से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में लागू करने की व्यावहारिक समझ और ज्ञान प्रदान करते है।

16

नीतिशास्त्र संबंधी शब्दावली

यहां नैतिकता व नीतिशास्त्र के आधारभूत सिद्धांतों तथा व्यावहारिक नीतिशास्त्र में प्रयुक्त प्रमुख शब्दावलियों को प्रस्तुत किया गया है; ये शब्दावलियां प्रायः सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-IV के अंतर्गत प्रश्नों व केस स्टडी में प्रयुक्त की जाती हैं।

A

Absolutism/पूर्णतावाद: यह सापेक्षवाद के विपरीत नैतिक सिद्धांत है जो मूल्य या अच्छाई में विश्वास करता है। प्राचीन ग्रन्थों में पूर्णतावाद को न्याय की स्थापना के रूप में वर्णित किया गया है जिसे स्वर्ग के धरती पर अवतरण के बराबर बताया गया है।

Accountability/जवाबदेही: यह लिए गए निर्णय और किये गए कार्यों के लिए हितधारकों को स्पष्टीकरण देने या औचित्य बताने के रूप में जाना जाता है। यह उस विशिष्ट व्यक्ति से संबंधित है जो उस विशेष परिस्थिति में घटित होने वाली किसी घटना के लिए जिम्मेदार होता है।

Administrative Principles of Dominance and Subordination/प्रभुत्व और अधीनता संबंधी प्रशासनिक सिद्धान्त: प्रभुत्व और अधीनता व्यक्तित्व संबंधी प्रमुख एवं परस्पर विरोधी गुण है। प्रभुत्व का गुण अधिकार जमाने या अपने अधीन करने की भावना है वहीं अधीनता सहनशीलता की भावना को उत्पन्न करता है। इन दोनों के बीच का सामंजस्य प्रशासन को नीतियों के अधिक प्रभावशाली क्रियान्वयन का साधन बनाता है।

Afflictions/वेदना: वेदना, लगातार दर्द या तनाव को प्रतिबम्बित करता है। नीति शास्त्र में इसे शारीरिक या मानसिक कष्टों के कारक के रूप में जाना जाता है जो कुछ गलत करने से या सही कार्य न करने से उत्पन्न होता है।

Agitation/उत्तेजना: यह चिंता या घबराहट की स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है, जो लोगों को एक विशेष प्रकार के परिवर्तन को बलपूर्वक प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

Ahimsa/अहिंसा: अहिंसा का अर्थ 'घायल न करना' तथा 'करुणा' के रूप में लिया जाता है, जो बौद्ध धर्म और जैन धर्म के साथ सनातन धर्म में एक प्रमुख गुण के रूप में जाना जाता है। यह शब्द संस्कृत 'हैन' धातु से बना है जिसका अर्थ चोट पहुंचाना होता है। इसे हिंसा के विलोम/विपरितार्थक शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है यानि कोई चोट या कोई नुकसान नहीं पहुंचाना 'अहिंसा' है। इसे गैर-हिंसा के रूप में भी जाना जाता है।

Altruism/परोपकारिता: नीतिशास्त्र में परोपकारिता स्वार्थ या अहंकार के विपरीत, दूसरों के लिए निस्वार्थ भावना से कार्य करने के गुण के रूप में जाना जाता है।

Alienation/वैराग/परायापन: यह पराया होने के अनुभव या अवस्था के रूप में जाना जाता है। अलगाव को अवधारणा के स्तर पर मनोवैज्ञानिक या सामाजिक बीमार के रूप में भी जाना जाता है जिसमें एक व्यक्ति अपने करीबी लोगों के बीच भी अलग-थलग महसूस करने की समस्या से ग्रस्त होता है।